

क्या नए वैज्ञानिक सबूत जीवन की उत्पत्ति के बारे में डारविन के उत्पत्ति के सिद्धान्त का अंत करते हैं? प्रोग्राम -5

अनाऊंसर: आज जीवन के बारे में सबसे महत्वपूर्ण सवाल है, हम कहाँ से आए हैं? हम यहाँ कैसे पहुंचे? इस कारण हम अस्तित्व में आए? चार्ल्स डारविन ने अपनी ओरिजन ऑफ़ स्पीशीज में, माना है कि वो नहीं जानते कि पहला सेल किस तरह अस्तित्व में आया, अनुमान लगाया कि किसी तरह से कुछ साधारण सेल एक साथ आए, और पहला प्रिमेतिव सेल बना, शुरू की पृथ्वी के पानी से बना।

लेकिन आज डारविन के उत्पत्ती के सिद्धान्त को चुनौती मिलती है, मॉलिक्यूल बायोलॉजिस्ट द्वारा, जैसे वैज्ञानिकों ने खोज निकाला कि मनुष्य के सेल सरल नहीं हैं, लेकिन विश्वास के परे बेचिदा हैं।

एल छोटी सी सेल माईक्रो मीनी राईज़ फैट्री है, जिसमें हजारों खासकर बनाए गए पीसेस हैं, जो खास मोलीक्यूलर मशीनरी के हैं, जो एक लाख मिलियन एटम से बने हैं।

हर सेल के न्यूक्लियस में डी एन ए मॉलिक्यूल है, जो कि तीन बिलियन खास जानकारी से भरा है, जो डिजिटल कोड में हैं, ये कोड सेल को बताता है कि कैसे कामप्लेक्स सेल मॉलिक्यूल बनाए, जिसे प्रोटीन कहते हैं, कि सेल के काम जीवित रह सके।

डी एन ए की से सटीक जानकारी कहाँ से आती है? क्या ये बिना निर्देश के स्वाभाविक शक्ति के कारण है? या ये बुद्धिमान निर्माता के कारण बना है?

माइक्रोसॉफ्ट के बिल गेट्स ने कहा है, मनुष्य का डी एन ए एक कंप्यूटर प्रोग्राम जैसे है, हमने जो भी बनाया है उससे बहुत बहुत आधुनिक है।

आज आप सीखेंगे कि क्यों मनुष्य के सेल से बनाया गया डी एन ए का डिजिटल कोड, ये बुद्धिमान निर्माता का साबित करनेवाला सबूत है।

मेरे मेहमान हैं डॉ. स्टीवन मायर, जो संसार के बुद्धिमान निर्माता के सह-संस्थापक हैं, इन्होंने विज्ञान में पी एच डी पाए हैं, कैबरिज यूनिवर्सिटी से, हम आपको जुड़ने का न्योता देते हैं।

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: प्रोग्राम में स्वागत है, हम उठनेवाली बहस के बारे में चर्चा कर रहे हैं, कि जीवन कहाँ से शुरू हुआ, ये कैसे शुरू हुआ? पहली सेल कहाँ से आई? और हमारे साथ ये हैं जो इसके बिच हैं, ये हैं फिलोसोफर ऑफ़ साइंस, डॉ. स्टीवन मायर, इन्होंने बेस्ट सेलिंग बुक लिखी, और आप इसे इंटरनेट पर देख सकते हैं, ये है सिग्रेचर इन द सेल, डी एन ए एंड द एवीडंस फॉर इंटेलीजेंट डिजाइन, और सच में ये कह रहे हैं, यही कि

जीवन अकस्मात नहीं आया, और सबूत तो सेल में ही है, और स्टीवन हमें डी एन ए के बारे में बताइए, और आप क्या कहेंगे?

डॉक्टर स्टीफन मायरः: जी, जीवन की शुरुवात के बारे में सबूत का बेचिदा भाग ये है, ये तो वो जानकारी है जो सेल के बिच शो चलाती है/और इनमे से ज्यादातर जानकारी डिजिटल कोड के रूप में रखी गई है, जो डी एन ए मॉलिक्यूल में पाई जाती है, ये जानकारी सॉफ्टवेयर प्रोग्राम जैसे है, बिल गेट्स कहते हैं जिसे रिचर्ड डॉकीन्स कहते हैं कि मशीनरी कोड्स हैं, वो कहते हैं कि ये मशीन कोड जैसे हैं, याने हम उसे देख रहे हैं जो डिजाईन जैसे दिखती है, और फिर भी बिना निर्देश की क्रिया है, जो किसी तरह से इस जानकारी की शुरुवात के बारे में हमें बता सके/

याने 19 वीं सदी में ये सबसे बड़ी बहस थी, याने डिजाईन के रूप को देख रहे थे, डिजाईन के भ्रम को देख रहे हैं, या हम सच में डिजाईन को देख रहे हैं, इस जीवित संसार में, और जब हम जीवन की बुनियाद में आते हैं, जीवन के सबसे छोटे भाग में, याने पहली सेल में, तो हम डिजिटल जानकारी की टेक्नोलॉजी देखते हैं, नैनो टेक्नोलॉजी, और जानकारी छोटे भाग में रखी गई है, और प्रोसेसिंग टेक्नोलॉजी और हर तरह की मशीनरी टेक्नोलॉजी कि उस जानकारी को पढ़ सके, याने ये नए जमाने की बायोलॉजी है, और मैं इस बात पर बहस कर रहा हूँ कि हम केवल जानकारी नहीं देख रहे हैं, और ये केवल डिजाईन का दिखावा नहीं है, या डिजाईन का भ्रम नहीं, लेकिन हम उसे देख रहे हैं जो सच में बुद्धिमत्ता के द्वारा उत्पादन हुआ है/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: ठीक है, यदि आप नहीं मानते हैं कि किसी ने बुद्धिमत्ता से इसे वहां पर रखा है, ठीक है तो नैचरलीस्टिक थियरी के साथ आना होगा/और हमने अवसर के बारे में पहले चर्चा की है, और आप कहे रहे हैं कि सारे वैज्ञानिक अवसर का इनकार कर रहे हैं, उन्होंने क्या पाया? अगली दो थियरी क्या हैं?

डॉक्टर स्टीफन मायरः: जी, अवसर और ये बहुत से लोगों के अद्भुत बात है, वो सोचते हैं कि अवसर की बात है, यदि आप वैज्ञानिक संसार में नहीं हैं, तो आप सोचते हैं कि अवसर की बात है, इसे सब मुख्य जीवन की शुरुवात के बायोलॉजिस्ट ने अवसर का इनकार किया है, सन 1960 से, क्योंकि खोज हुई है कि ये कितना उलझा हुआ है, और सेल की बेचिदगी कितनी उलझी हुई है, और कितना सटीक जानकारी उपलब्ध है, केवल एक ही डी एन ए में, याने केवल एक जिन में, जो एक प्रोटीन बनाने के लिए जरूरी है/याने अवसर की बात तो पूरी तरह दूर हो चुकी है, लोगों ने अवसर को दूसरी चीजों के साथ में जोड़ने की कोशिश की है, दूसरे नैचरलीस्टिक मैकेनिज्म से जोड़ना चाहा, ये तो खासकर डारविन का तरीका है, डारविन ने नए तरह के जीवन की शुरुवात के बारे में बताने की कोशिश नहीं की, केवल अवसर से, उन्होंने अवसर को रैंडम और अवसर की विविधता से जोड़ा, नैचरल सिलेक्शन की दूसरी बातों के साथ, और वैज्ञानिकों ने पहले जीवन के बारे में बताने की कोशिश भी इसी तरह की/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: ठीक है, तो बताइए कि इसके विरुद्ध में क्या सबूत हैं?

डॉक्टर स्टीफन मायरः: जी ये ऐसा सवाल है जो हमारी स्ट्रेटेजी की मांग करता है, यदि आप हले जीवन की शुरुवात के बारे में बताना चाहते हैं, तो समस्या है क्योंकि नैचरल सिलेक्शन को टूटने की जगह तक ले जा रहे हैं, क्योंकि नैचरल सिलेक्शन डारविन के विचारों के बचाव की बात है, जैसे ओर्गानिज्म का समूह, वो फिर उत्पादन करते हैं, और फिर अगली पीढ़ी में बड़ा समूह होता है, वो एक दूसरे से स्पर्धा करते हैं, यदि किसी ओर्गानिज्म में कोई बदलाव है तो दूसरा ओर्गानिज्म उठ खड़ा होता है, और फिर ये बात उन में भी आती है और ये उनकी संख्या में बदलाव लाता है/ यही तो क्रान्ति लाता है कि पुनः उत्पादन में स्पर्धा यहाँ पर होती है/

जी, यदि ओर्गानिस्म के पहले नैचरल सिलेक्शन को चुनते हैं, ये ऐसे काम करेगा, याने कोई स्पर्धा नहीं है, कोई पुनः उत्पादन नहीं है, ठीक है, यही असली समस्या है, नैचरल सिलेक्शन के काम करने के लिए खुद जैसे बनानेवाले ओर्गानिस्म होने चाहिए/और अब स्क्रीन पर एक स्लाइड है, जिससे हम इस समस्या को देख सकते हैं, नैचरल सिलेक्शन आधारित है, पहले से अस्तित्व रखनेवाले खुद जैसे उत्पन्न करनेवाले ओर्गानिस्म पर/ लेकिन

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: वो ओर्गानिस्म को वहां पर रहना चाहिए/

डॉक्टर स्टीफन मायरः: ओर्गानिस्म को वहां होना चाहिए लेकिन उससे भी बुनियादी बात तो ये है, हमारे पास प्रोटीन के डी एन ए की जानकारी होनी चाहिए, इन सारे ओर्गानिस्म में ही फिर उत्पादन होते हैं, सेल डिविजन को देखिए, यहाँ पर पहले से अस्तित्व रखनेवाली जानकारी है, प्रोटीन और डी एन ए मॉलिक्यूल की, जो ये क्रिया चलाती है, तो हम क्या बताने की कोशिश कर रहे हैं? हम यही बताना चाहते हैं कि डी एन ए और प्रोटीन की शुरुवात सबसे पहले, और हम इस क्रिया को भी देख रहे हैं, जो इन सारी बातों के पहले से अस्तित्व में थी/

अब एक वैज्ञानिक, नोबल प्राइज विजेता, मॉलिक्यूलर बायोलॉजिस्ट जिनका नाम था क्रिश्चन डूवे, जिन्होंने जीवन की शुरुवात की समस्या के बारे में बहुत काम किया है, इन्होंने बहुत ही सरल शब्दों में इस समस्या को थैयरी की पूरी क्लास में रखा है, वो इस तरह से कहते हैं कि प्री-बायोटिक नैचरल सिलेक्शन की थैयरी, असफल होती है क्योंकि वो जानकारी की जरूरत के बारे में बताते हैं, लेकिन जिसे बताया जाना चाहिए उसके पहले से अस्तित्व के बारे में अनुमान लगाते हैं/इन अपरोच में यही समस्या है/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: ठीक है, स्टीवन, ये अवसर से नहीं, नैचरल सिलेक्शन से नहीं, लेकिन बहुत ही विख्यात थैयरी चल रही है, आर एन ए के बारे में, ये आर एन ए हायपोथेसेस क्या है, और इसमें क्या गलत है?

डॉक्टर स्टीफन मायरः: जी, इसे आर एन ए वर्ल्ड हायपोथेसेस कहते हैं, और साथ हि: ये जोड़ना चाहते हैं, नैचरल सिलेक्शन को प्री-बायोटिक स्थर पर, इसे रैंडम वेरिएशन और अवसर के वेरिएशन के साथ/ लेकिन खुद कि दर्शानेवाले ओर्गानिस्म को देखने के बजाए, ये शुरू के दिखनेवाले आर एन ए मॉलिक्यूल के बारे में बताता है, आर एन ए मॉलिक्यूल जो खुदके जैसे बनाता है/और इस क्रिया में मॉलिक्यूल के वंश को तैयार करता है, जो एक दूसरे से स्पर्धा करते हैं और इससे नैचरल सिलेक्शन जल्दी होता है/

अब हायपोथेसेस जानकारी की शुरुवात की समस्या को खत्म करने के उद्देश्य से नहीं दिया गया है, सच में नहीं करता है, मैं कुछ पल में बताऊंगा कि क्यों नहीं करता, ये शुरू में लायाया गया कि बताए जैसे कि अंडा और चिकन की समस्या, बायोलॉजी के समस्या के बारे में, ये स्लाइड बताती है कि ये किसबारे में है/यदि आप सेल को देखते हैं, इसमें बहुत ही सटीकता से उलझी हुई बात है, ऐसा जिसे इंजीनियर पहचान पाते हैं/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: जी, हम केवल एक सेल को देख रहे हैं/

डॉक्टर स्टीफन मायरः: शरीर की किसी भी सेल में ये अंडे और चिकन जैसी समस्या है, एक दूसरे पर आधारित है, ये एक दूसरे पर आधारित भागों पर होता है, हमें डी एन ए और जानकारी चाहिए कि उन प्रोटीन को बना सके जिसे जीवन आगे बढ़ सके/ लेकिन प्रोटीन्स की जरूरत है, कि डी एन ए मॉलिक्यूल की जानकारी को प्रोसेस कर सके, याने डी एन ए प्रोटीन्स पर आधारित है, लेकिन प्रोटीन्स डी एन ए पर आधारित है/याने कौनसा पहले आता है? याने एक के बिना दूसरा नहीं, और किसी तरह काम नहीं कर सकते हैं/

जी, इस पहली को विभाजित करने के लिए, एक थैयरी जो बताई गई जिसे आर एन ए वर्ल्ड कहते हैं, जो इस बात पर आधारित है कि एक ऐसा मॉलिक्यूल है जो जानकारी जमा कर रखता है, और कैमिकल रिएक्श को

कैटलाईज़ करता है, जिसे आर एन ए कहते हैं, याने केवल डी एन ए और केवल प्रोटीन होने के बजाए, कुछ वैज्ञानिक बताते हैं कि जीवन पहले शुरू हुआ, जीवन का मार्ग शुरू हुआ, याने जीवन के मार्ग की क्रान्ति की क्रिया शुरू हुई, खुद को कॉपी करनेवाले आर एन ए मॉलिक्यूल द्वारा/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: एक सेल में ये दोनों होते हैं/

डॉक्टर स्टीफन मायरः: जी, ये जानकारी रखता है और रिएक्शन को कैटलाईज़ करता है, प्रोटीन्स जैसे, अब इसमें जो समस्या है वो बड़ी है/पहले तो ये है कि सरल कैटलीसीस में फर्क होता है, जिसे छोटे मॉलिक्यूल भी कर सकते हैं, जो आर एन ए कर सकता है, और जो एन्जाइमन्स करते हैं, Enzyme catalysis जो प्रोटीन्स करते हैं, प्रोटीन्स एन्जाइन काम में मदद करनेवाले और मदद न करनेवाले एन्जाइमस को एक साथ जोड़ते हैं, जो ऐसे बहुत से स्थर के रिएक्शन में नहीं होता/ और ये ऐसा है जो आर एन ए मॉलिक्यूल नहीं कर सकता है/ ये पूरी तरह से अलग है, ये सच में चिकन और अंडे की समस्या दूर नहीं करता है/

लेकिन उससे परे, जो मुझे चकित करता है कि यहाँ जानकारी की दो समस्याएँ हैं, जो इस आर एन ए वर्ल्ड हायपोथेसेस से जुड़ी हैं, यहाँ में एक डायग्राम है जो आर एन ए वर्ल्ड को सात कदम में दिखाता है/अब एक स्लाइड पीछे जाकर देखते हैं कि आर एन ए वर्ल्ड थैयरी क्या देखती है, वो सोचते हैं कि आर एन ए की बनावट जो लगभग डी एन ए जैसी है, ये एक सिंगल स्टैण्डर्ड नुक्लेइक एसिड है, जो शुगर और फॉस्फेट बेस है, वो तो कल्पना करते हैं कि ये कम्पोनेंट्स पृथ्वी की शुरुवात में ऐसे उभरकर आए/याने ये मुश्किल कदम है, और फिर कल्पना करते हैं कि वो एक साथ जुड़कर आए एन ए मॉलिक्यूल बनते हैं, और फिर कल्पना करते हैं कि आर एन ए मॉलिक्यूल खुद को कॉपी करते हैं, कि डारविन के विचार से मॉलिक्यूलस के बिच भी बने रह सकते हैं/

अब यही पर रुक जाइए, तीसरा कदम मुश्किल है, क्योंकि ये जानकारी की जरूरत के बारे में बताता है, हमने आर एन ए के बारे में यही सिखा है, कि सबसे पहले कि हम देख सकते हैं कि ये केवल अपने दसवे भाग की ही कॉपी कर सकता है, हमने कोशिश की आर एन ए मॉलिक्यूल में जिसमें खुद को कॉपी करने की श्रमता है, हम सबसे बेहतर यही कर पाए कि आर एन ए मॉलिक्यूल ने केवल खुद का दसवा भाग ही कॉपी किया, लेकिन उससे इतना छोटा सा काम करवाने के लिए भी, ये तो आधारित होता है कि आर एन ए मॉलिक्यूल जो कि बहुत ही सटीक रूप में अपने न्यूक्लियर टाइपबेसेस बने होने चाहिए/आर एन ए में डी एन ए जैसे ही जानकारी रखने की बुनियाद है, याने ये इस आर एन ए वर्ल्ड हायपोथेसेस में तीसरा कदम में ऐसा मॉलिक्यूल होना चाहिए जिसमे बहुत जानकारी हो, और कोई भी कोई भी आर एन ए थैयरिस्ट नहीं बता पाते हैं कि ये जानकारी कहाँ से आती है/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: ये केवल थोड़ी जानकारी नहीं है, बहुत जानकारी है/

डॉक्टर स्टीफन मायरः: ये बहुतसी जानकारी है, और फिर जब हम कुछ कदम आगे बढ़ते हैं, आर एन ए वर्ल्ड में ये पांचवा कदम, किसी समय पर आपको आर एन ए वर्ल्ड से दूर जाना होगा, जहाँ आर एन ए, आर एन ए को कॉपी करता है, आज के इस सिस्टम में जिसे हम ट्रांसलेशन कहते हैं, जहाँ जानकारी होती है जैसे हमने कुछ हफ्तों पहले देखा था कि जानकारी प्रोटीन्स में बदली जाती है, उस होच द्वारा जिसे ट्रांसलेशन एपरेटस कहते हैं, पूरी मशीनरी जो डी एन ए की जानकारी प्रोटीन्स में जाती है, ये पूरा ट्रांसलेशन एपरेटस में बहुत से प्रोटीन्स लगते हैं, याने आर एन ए, आर एन ए को कॉपी नहीं करता है, किसी हद तक आपको डी एन ए में जानकारी चाहिए, जो प्रोटीन्स की मदद से, ट्रांसलेट किए जाते हैं, उस ट्रांसलेशन सिस्टम को बनाने के लिए बहुत से प्रोटीन्स लगते हैं, आज हमारे जीवन में यही तो है, ये बताना होगा कि यहाँ सच में क्या है/और ये भी जानकारी की बड़ी समस्या होती है, क्योंकि ट्रांसलेशन सिस्टम बहुत से अलग प्रोटीन्स कम्पोनेंट्स से बना होता है/

डॉक्टर स्टीफन मायरः: याने ये तो केवल तीन समस्याएँ हैं, आर एन ए असली एन्जाईम कैटलिस्ट जैसे काम नहीं करता है/और आर एन ए, आर एन ए को कॉपी कर रहे हैं इसकी जानकारी नहीं मिलती है, आर एन ए खुद के जैसे बनाते हैं, और कोई विवरण नहीं आधुनिक ट्रांसलेशन सिस्टम जैसे कुछ बना सके, जोकि सेल का भाग है, इसका विवरण देना चाहिए/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: स्टीफन वैज्ञानिकों ने इस पर जो खोज की है वो क्या कहते हैं?

डॉक्टर स्टीफन मायरः: जी, यही की आर एन ए वर्ल्ड हायपोथेसिस काम नहीं करता है, क्रिश्चन डी डू, जिसके बारे में कुछ समय पहले कहा था, नोबल विजेता और जीवन की शुरुवात पर काम किए हैं, जो कहते हैं कि हमें ऐसी थैयरी चाहिए जो आर एन ए के पहले संसार के बारे में बताती हो/क्योंकि वहां तक जाना बिना किसी बुनियाद के ये मुश्किल है/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: तो बस एक कदम पीछे चले/

डॉक्टर स्टीफन मायरः: जी, एक कदम पीछे आया, रोबर्ट शिपीरो जिसे डॉ. नो के नाम से जाना जाता है, ये कैमिस्ट हैं जो कैमिस्ट्री जानते हैं कहते हैं, ये काम नहीं करेगा दोस्तों, ये काम नहीं करेगा, संसार ऐसे काम नहीं करता है, तो, लोग अगल अपरोच को देख रहे हैं/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: ठीक है, वो एक और थैयरी बता रहे हैं और वो क्या है?

डॉक्टर स्टीफन मायरः: जी एक और अपरोच है इसे कईबार जरूरत कहते हैं, जोनैचरल लॉ पर आधारित है, और जीवन की शुरुवात के विज्ञान में कहते हैं self organizational theories और इनसे पहली बार बताया गया, 60 के दशक में, दिन केन्यन द्वारा/और इनके पास समझदार विचार थे, उस समय सही बात थी, याने बात ये थी कि हम जानकारी को बता सकते हैं, जो प्रोटीन मॉलिक्यूल बनाने के लिए जरूरी है, उदाहरण के लिए, ये तो खुद को क्रम में लाने, खुद को सही रखनेवाली कैमिकल अट्रैक्शन की शक्ति, और उन्होंने इसे बताते हुए ये विचार बताया कि ये क्रिस्टल जैसे बनता है, हमारे पास कैमिकल वर्ल्ड में बहुत क्रम के स्ट्रक्चर हैं, जिसे क्रिस्टल कहते हैं, यदि हम क्रिस्टल साल्ट ले, इसमें सोडियम और क्लोराइड है, इसे एक साथ जोड़े, सोल्यूशन में और सोडियम का पॉजिटिव चार्ज, और क्लोराइड का निगेटिव चार्ज, इससे होगा ये...

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: अपने आप/

डॉक्टर स्टीफन मायरः: अपने आप, ये खुद को जोड़ता है अच्छे स्ट्रक्चर में, और ऐसे बहुत से इऑंस जुड़ जाते हैं, और बहुत ही अच्छा रिपीट होनेवाला क्रिस्टल स्ट्रक्चर बनता है/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: पैटर्न, सही स्ट्रक्चर/

डॉक्टर स्टीफन मायरः: पैटर्न, बिलकुल, ये विचार की प्रोटीन्स में सही तरह से क्रम में रखे गए अमीनो एसिड और कौन जाने शायद डी एन ए मॉलिक्यूल में रखी गई जानकारी की बुनियाद, और ये केन्यन का विचार है, इन्होंने अपनी किताब Biochemical Predestination में लिखा है, और ये जैक मनोर की तीन कैटगरी के बारे में बताते हैं, जिसके बारे में हमने पिछले प्रोग्राम में कहा था, जैक मनोर कहते हैं कि यदि आप वैज्ञानिक हैं, और कुछ बताना चाहते हैं तो अवसर देखना होगा, जरूरत देखनी होगी, या इन दोनों को मिलाकर देखना

होगा, ये जरूरत को देखने के बारे में है, Predestination. Biochemical predestination मॉलिक्यूल खुद को आपस में केमिकल शक्ति से क्रम में लाते हैं/

जी, दिलचस्प बात है कि कहानी पूरी करने के लिए, प्रोफेसर केन्यन जो जीवन की शुरुवात के बड़े वैज्ञानिक हैं, अंत में इन्होंने अपनी ही थैयरी का इनकार किया, क्योंकि किसी समय इन्होंने जाना कि ये काम नहीं करती है, उन्होंने जाना कि चाहे ये प्रोटीन्स के लिए काम करती हैं, बाद में पता चला कि नहीं, तो ये निश्चय ही डी एन ए के लिए काम नहीं करेगी, डी एन ए में प्रोटीन्स बनाने की जानकारी होती है, ये बहुत ही मुश्किल मुद्दा है जिसका जवाब देना चाहिए/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: तो इसने काम नहीं किया तो फिर क्या?

डॉक्टर स्टीफन मायरः: जी, मैं सोचता हूँ कि बताए कि क्यों काम नहीं किया, ये मुश्किल बात है, इसे देखने के लिए हमें डी एन ए केमिस्ट्री में जाना होगा, ये दिलचस्प है, यदि आप डी एन ए की केमिस्ट्री को देखें, तो आप बाजु में देखेंगे कि मॉलिक्यूल के दोनों तरफ, पी हैं, और पेंटागोन हैं, पेन्टगोनल आकार में शुगर हैं, पी तो सरकुलर फॉस्फेट मॉलिक्यूल हैं, जो गोल आकार में दिखाए गए हैं, ये मॉलिक्यूल की रीड की हड्डी है, लेकिन जानकारी इस भाग में नहीं है, जानकारी तो ए, सी, जी और टी द्वारा बताई गई है, स्पाइन के भीतरी भाग में, यही बुनियादी बात है/ इन बेसेस की अरेन्जमेन्ट में, याद रखिए ये जीवित प्रोटीन्स और प्रोटीन मशीन के लिए जानकारी होती है/

अब सवाल है कि क्या डी एन ए की जानकारी हमें बता सकते हैं, जो केमिकल अट्रैक्शन के परिणाम में होता है, तो जवाब है नहीं/ जब आप स्क्रीन पर मॉलिक्यूल को करीब से देखें, तो ये छोटी स्टिक्स हैं, स्टिक केमिकल बांड्स बताते हैं, अट्रैक्शन की शक्ति जो मॉलिक्यूल में काम करती है, देखिए शुगर और फॉस्फेट में बांड्स हैं, बेसेस और शुगर फॉस्फेट बाइक बोन में बांड्स हैं, लेकिन देखिए वर्टिकल एक्सेस में जोड़ने के लिए कोई बांड्स नहीं हैं, ये जानकारी रखनेवाली एक्सेस हैं, और कोई केमिस्ट्री नहीं बताती है कि कैसे एक दूसरे के साथ काम करते हैं, दूसर शब्दों में बेसेस की अरेन्जमेन्ट को निश्चित करने के लिए कोई केमिस्ट्री नहीं है/

अब मेरे पास एक विज्युअल चीज़ है जो इसे स्पष्ट बताती है, मुझे हालही में ये संदेश मिला, मैं पहले इसे सोचा जब बच्चे छोटे थे, अब बीटा कॉलेज में पढ़ता है, ये संदेश मुझे उससे मिला है, डैड सेंड मनी, अब मुझे ये संदेश फ्रिज पर मिलते थे, क्योंकि वो मेटेलिक होती है और इन अक्षरों में मैग्नेट होते हैं, ठीक है, याने आकर्षण की शक्ति है, जो बताते हैं कि ये अक्षर क्यों इससे चिपकते हैं, जैसे ये बैक बोर्ड है, मैग्नेटिक बैक बोर्ड है, उसी तरह से ये जोड़ते हैं कि क्यों डी एन ए के कैरेक्टर इसे जोड़ते हैं, ये केमिकल बैक बोन से जुड़े हैं, ठीक है, आकर्षण की शक्ति इसे बताती है, लेकिन क्या वो क्रम बताते हैं, देखिए इन अक्षरों के बिच कोई मैग्नेटिक शक्ति काम नहीं करती है, इससे ये अक्षर क्रम में नहीं जुड़ते हैं, मैग्नेटिक शक्ति बताती है कि अक्षर क्यों जुड़ते हैं, ये क्रम मैग्नेट निश्चित नहीं करता, और मैं ये बता सकता हूँ अक्षरों को हटाने के द्वारा, इससे यहाँ कि जानकारी खत्म हो जाती है/ जब कि वही मैग्नेटिक शक्ति काम करती है/

डी एन ए मॉलिक्यूल में भी यही बात होती है, आकर्षण की शक्ति जो संदेश देनेवाले टेक्स्ट के लिए है, जो बैक बोन से जुड़ी है, ये कैरेक्टर के अरेन्जमेन्ट के लिए जिम्मेदार नहीं हैं/ आप यदि डी एन ए के केमिकल स्ट्रक्चर को देखेंगे तो इसे पाएंगे/ याने खुद क्रम में लाने का विचार कि आकर्षण की शक्ति, क्रम पर अधिकार करती है, ये पूरी तरह से सही नहीं है, हम डी एन ए की केमिस्ट्री द्वारा उसे देख सकते हैं, याने ये थैयरी भी फेल होती है, पहले व्यक्ति जिसने ये माना, ये वही व्यक्ति थे जिन्होंने इस थैयरी को शुरू किया था, याने प्रोफेसर दिन केन्यन/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: ठीक है स्टीफन ये अद्भुत बात है, यदि अवसर से सवाल का जवाब नहीं मिला, नैचरल सिलेक्शन से नहीं मिला, और इन दोनों को जोड़ने से नहीं मिला, तो कहाँ जाएं, क्या रह गया है?

डॉक्टर स्टीफन मायरः: जी, ये अपरोच, जरूरत का अपरोच भी देखा गया लेकिन ये फेल हुआ, और मैं सोचता हूँ कि जिस तरह से फेल हुआ ये हमें इसकी समस्या बताता है/और सहमती की दिशा में लेकर आता है, यदि आप मेरे असली उदाहरण को देखेंगे तो यहाँ संदेश है, चॉकबोर्ड पर और ये मैग्नेटिक आकर्षण का परिणाम नहीं है, तो ये कहाँ से आया है? अवश्य ही बुद्धिमत्ता से आया है, मेरे बेटे ने इन अक्षरों को अरेन्ज किया है, याने ये बुद्धिमत्ता की डिजाइन का रूप है/ और हम सब जानकारी के बारे में यही प्रेरणा रखते हैं, जानकारी तो मन का उत्पादन है, और हम अनुभव से जानते हैं कि ये बुद्धिमत्ता से आता है, और मैंने यही पाया इन अलग नैचरलिस्टिक अपरोच को देखा, तो मैंने सोचा कि क्या ये संभव है कि बुद्धिमत्ता की डिजाइन अगल साइंटिफिक हायपोथेसिस बना सकती है?

बुद्धिमत्ता की डिजाइन की थैयरी जड से देखा तो ये बहुत ही सरल है, और ये विचार है कि हम बुद्धिमत्ता की डिजाइन के विचार को बताता है, उन परिणामों से जो ये पीछे छोड़ जाते हैं, उदाहरण के लिए माउन्ट रशमोर को देखिए, हम वहाँ पहाड़ पर सुन्दर चेहरों को देखते हैं, तो हम जानते हैं कि ये हस्तकलाने काम किया है, सेल के भीतर चेहरे का रूप नहीं होता है, यहाँ बुद्धिमत्ता को दर्शानेवाली बातें हैं, डिजिटल कोड, बेचिदा नैनोटेक्नोलॉजी, छोटे छोटे मिनिचर मशीन्स, ऐसी बातें जो बुद्धिमत्ता को छोड़ हम और कही नहीं देख सकते, हमारी बहस यही है कि हम जो बायोलॉजी में देखते हैं, ये केवल डिजाइन का दिखावा नहीं है, लेकिन ये सच में हमें बुद्धिमत्ता की डिजाइन के सबूत देते हैं/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: ठीक है, आपने किताब में और भी साइंटिफिक खोज के बारे में बताया है, जो पाए हैं और ये डिजाइन की बहस को निश्चित करने में मदद करते हैं, हॉलमार्क डिजाइन, ये क्या है?

डॉक्टर स्टीफन मायरः: जी, किताब में मैंने बुद्धिमत्ता की डिजाइन की केस की बात बताई है, ये आधारित है जो हम सन 60 से जानते हैं, जहाँ डिजिटल कोड सारी बातों को बताता है, डी एन ए की जानकारी, लेकिन डी एन ए की जानकारी के साथ/हम बहुत कुछ सिख रहे हैं कि सेल कैसे स्टोर करते हैं, और इन जानकारी को ओर्गनाइज़ कर इसे प्रोसेस करती है, और इन में से हर नई खोज, मैं सोचता हूँ कि ये तो बुद्धिमत्ता की डिजाइन को दर्शाने की जानकारी देते हैं/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: ये चौकानेवाला है/

डॉक्टर स्टीफन मायरः: जी, चौकानेवाला है, उदाहरण के लिए सेल में जानकारी की बात है, जो स्पेल चेल कर सकती है, जहाँ सेल जानकारी कॉपी करती है, और जब कॉपी करना गलत होता है, और जानकारी कॉपी करने में कुछ गलती होती है, तो प्रोटीन काम्प्लेक्स है जो रुककर वापस जाता है, और फिर सही जानकारी देकर पहले की गलती को सही करता है/और यहाँ जानकारी को ऑर्गनाइज़ करते हैं, सेल की जानकारी क्रम के अनुसार रखी जाती है, जैसे कंप्यूटर में सही क्रम से जानकारी रखी जाती है, फाइल फोल्डर में है, और फिल्टर सुपर फोल्डर में है, और यहाँ तक कि नेस्टेड कोडिंग जानकारी है, जहाँ ए जेनेटिक संदेश दूसरे जेनेटिक संदेश में जाता है, जैसे रशियन डॉल्स हैं, ये तकनीक क्रिकटोग्राफी में उपयोग होती है/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: हमने माइक्रोस्कोप से देखा, और हमने उलझी हुई जानकारी देखी, जो बुद्धिमत्ता से ही आती है, अगले हफ्ते, हम टेलिस्कोप से देखेंगे, और हम देखेंगे कि साइंटिस्ट ने क्या पाया है, बिग बैंग और संसार की फाइन ट्यूनिंग के बारे में, और हम उन सिद्धांतों को देखेंगे जो विज्ञान द्वारा पाए गए हैं, और हम देखेंगे कि

क्या हम वहां डिजाईन देखते हैं, और हम दोनों को एक साथ जोड़कर निश्कर्ष निकालेंगे, इस पुरे साइंटिफिक गैमेट के बारे में, डिजाईन के संबन्ध में, दोस्तों आप चूकना नहीं चाहेंगे, ये बहुत अद्भुत है, स्टीफन इसे सिखाने में बहुत अच्छे हैं, आशा है कि अगले हफ्ते आप जुड़ जाएंगे/

हमारे टीवी प्रोग्राम देखने के लिए मुफ्त में डाऊनलोड कीजिए जॉन एन्करबर्ग @Jashow

"छद्मत्त्वं यद्दृष्टुं इच्छामि तद्दृष्टुं इच्छामि" ऋषिः खन्धकः

@Jashow.org

कदम्बः 2015 ऋषिः